## पद २६८

(राग: झिंजोटी - ताल: त्रिताल)

देखो री नयन रूप नीको ।।ध्रु.।। कानन कुंडलको प्रकाश। छुप गये सूरज चंद्र आकाश। सीस पर मुगुट बिराजे। माथे चंदन टीको।।१।। पीत कसे गले बैर विराजे। रूप स्वरूपको बरनन आवे। शंख चक्र दो हात बिराजे। नाद सुनो मुरलीको।।२।। आसपास गोपाल मेला। बीच सुहावे बाल गोपाला। मानिकके प्रभु नंद-घर उपजे। धन्य भाग्य गोकुलको।।३।।